❋ 14 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] जड़ चित्र कुछ बोले तो नहीं सकते। शिवबाबा की पूजा करते हैं। वह कुछ बोलते हैं क्या! शिवबाबा एक ही बार आकार बोलते हैं। पूजा करने वालों को भी पता नहीं है कि यह ज्ञान सुनाने वाला बाप है। कृष्ण के लिए समझते हैं उसमे मुरली बजाई। जिसकी पूजा करते उनके आक्यूपेशन को बिल्कुल नहीं जातने। तो यह पूजा आदि निष्फल ही हो जायेगी, जब तक बाप आये।

2] सिवाए योगबल के कोई पावन बन नहीं सकता। विकर्म विनाश हो न सके। पानी में स्नान करने से कोई पावन नहीं बनते। यह है योग अग्नि। पानी होता है आग को बुझाने वाला। आग होती है जलाने वाली। तो पानी कोई आग तो नहीं है।, जिससे विकर्म विनाश हो।

3] सतयुग में यह साइन्स आदि काम में आती है। वहाँ तो महल आदि बनाने करने में देरी नहीं लगती। अभी तुम्हारी बुद्धि पारसबुद्धि बनती है तो सब काम सहज कर लेती है। जैसे यहाँ मिट्टी की इंटें बनती हैं, वहाँ सोने की होती है।

4] सूक्ष्मवतन में भी तुम फरिश्ते देखते हो ना ! तुम जानते हो मम्मा-बाबा योगबल से ऐसा फरिश्ता बनते हैं, तो हम भी बनेंगे। यह सब बातें बाप इसमें प्रवेश कर तुमको समझाते हैं। डायरेक्ट नॉलेज देते हैं।

5] जब बुद्धि कहाँ भी उलझन में आती है तो समझ लो जरूर कोई न कोइॅ मेरापन है। जहाँ मेरा आया वहाँ बुद्धि का फेरा हुआ। गृहस्थी बनकर सोचने से गड़बड़ होती है इसलिए बिल्कुल न्यारे और ट्रस्टी बन जाओ। ये मेरापन– मेरा नाम खराब होगा, मेरी ग्लानि होगी..... यह सोचना ही उलझना है।

❋ योग-

1] याद की यात्रा में रहकर पावन जरूर बनना है। पावन बनने का फुरना चाहिए। यही मुख्य सबजेक्ट है। जो बच्चे पावन बनते हैं वही बाप के खिदमतगार बन सकते।

2] जन्म-जन्मान्तर के पाप कर्म का बोझा जो सिर पर है उसे उतारना है। बाप योग की बात समझाते हैं। योग से ही विकर्म विनाश होंगे।

3] अब तुम बच्चों को अपनी आयु को बड़ा बनाना है योगबल से। तब बाबा कहते हैं योग कोई और बात नहीं, यह है याद की यात्रा। बाप को याद करते-करते पाप कटते जायेंगे, अन्त मती सो गति हो जायेगी।

❋ धारणा-

1] बच्चे यहाँ आते हो मुरली सुनकर जाते हो फिर सुनानी भी चाहिए। ऐस नहीं सिर्फ एक ही ब्राह्मणी मुरली चलायें। ब्राह्मणी को आप समान बनाकर तैयार करना चाहिए, तब बहुतों का कल्याण कर सकेंगे। अगर एक ब्राह्मणी कहाँ चली जाती है तो दूसरी क्यों नहीं सेन्टर चला सकती ! क्या धारणा नहीं की है? स्टूडेन्ट को पढ़ने और पढ़ाने का शौक चाहिए। मुरली तो बहुत सहज है, कोई भी धारण कर क्लासकरा सकते हैं।

2] बाप को याद करो तो सतोप्रधान बनेंगे। फिर यह शरीर भी छूट जायेगा। तुम्हाररी बुद्धि में अब यही है कि हम आत्मा सतोप्रधान बनें क्योंकि वापिस घर जाना है। सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे। वहाँ तो कहेंगे एक पुराना शरीर छोड़ दूसरा लेना है। वहाँ तो दु:ख की बात नहीं। यहाँ यह दु:खधाम है।

3] बड़े बाप के बच्चे हो इसलिए न तो छोटी दिल करो और न छोटी बातों में घबराओ।

❋ सेवा-

1] तो तुम बच्चे कहाँ भी जाते हो तो मैसेन्जर की निशानी– यह बैज साथ में जरूर चाहिए। भल कोई हंसी करे। इस पर क्या हंसी करेंगे। तुम तो यथार्थ बात सुनाते हो। यह बेहद का बाप है। उनका नाम है शिवबाबा, वह कल्याणकारी है। आकर स्वर्ग की स्थापन करते हैं। यह पुरूषोत्तम संगमयुग।

2] मुरली सुनकर फिर सुनानी है। पढ़ने के साथ-साथ पढ़ाना भी है। कल्याणकारी बनना है। बैज मैसेन्जर की निशानी है।